मैं उदास हूँ ! .....
कैसे कहूँ कि क्यों उदास हूँ .....

मुदी नहीं आँखे मेरी हैं, प्रकृति विलास हास नववर्तन
देख रहा हूँ प्राची दिशि में, इसका यह प्रतिक्षण परिवर्तन
तम का घूँघट उठा लाज की लाली मुख पर छाई
जाने किसे देखकर, ऊषा सुन्दरी मधुर मुस्काई

यौवन की मधुरिमा, भूमि के कण कण में छहराई
मैं कुरूप लाजों की मारी, घूँघट खोल न पाई
मुझे देखकर रूठोगे, बस सोच सोच कर मैं निराश हूँ
अलि की बजी मधुर शहनाई, नैन कमल ने खोले

बसा लिया अँखियों में अलि को, मेरा भी मन बोले
क्या निवास प्रिय के लोचन में, तेरा भी सखि होगा ?
पर निज स्वर पर गया ध्यान सोचा क्या संभव होगा ?
कर लेगा तू बन्द द्वार मेरे स्वर क्या सुन लेंगे

jke xu xkÅ

।। श्री रामः शरणं मम् ।।

बन्द हो गये द्वार बस यही सोच सोच कर मैं उदास हूँ
मृदु मलयज आया समीर मधु पिये हुए मतवाला
कलियाँ लख खिल गई सुरभि ने पहनाई है माला,
झूल रही हैं वे उमंग में मेरी भी मति डोली

मैं भी पिय हिय लगूँ किन्तु, सौरभ से खाली झोली
क्या ले तुम्हें निमंत्रण दूँ आने को तू आवेगा ही,
किन्तु डर रही हूँ आकर तू चैन नहीं पावेगा,
कैसे मैं फिर तुम्हें बुलाऊँ सोच सोच कर मैं हताश हूँ

रात हुई चाँदनी और तारों का मोहक मेला,
लुका छिपी हो रही हाय पर मैं हूँ वहाँ अकेला,
चाह हो रही पीछे से आ आँख मूँद लूँ तेरी,
किन्तु पाश मेरा कठोर दुख जाय न आँखे तेरी,

तू तो है समीपतम मेरे, किन्तु नहीं मैं, तेरे पास हूँ ।